संपादकीय

जिस वक्त मैं यह संपादकीय लिख रहा हूं, लगभग पूरा विश्व एकजुट होकर 'कोरोना-वाइरस' की इस वैश्विक महामारी से अभूतपूर्व ढंग से जूझ रहा है। भारत में भी हमारी पूरी सावधानियों तथा बचाव के साधनों के अपनाने के बावजूद धीरे-धीरे यह दानव पूरे देश को अपने चंगुल में जकड़ता जा रहा है। फिर भी यह संपादकीय लिखते हुए मैं इस अडिग आशा तथा विश्वास से भरा बैठा हूं, कि यह अंक जब आपके हाथों तक पहुंचेगा,तब तक संपूर्ण विश्व पर छाई वैश्विक महामारी, कोविड-उन्नीस की मृत्यु की यह सघन काली छाया छंट चुकी होगी। हम इस नामुराद कोरोना वायरस को परास्त कर या तो दफना चुके होंगे या फिर इसे नेस्तनाबूद करने के लक्ष्य के निकट होंगे।

मानव प्रजाति को उसकी अपनी भस्मासुरी अकल व अनवरत अकाल के बाद सबसे ज्यादा नुकसान महामारियों ने पहुंचाया है। भले विश्वास करना कठिन हो पर सच यही है कि कि विश्व युद्धों में मारे गए मनुष्यों की संख्या इनकी तुलना में काफी पीछे है। यह कहना एक हद तक सही माना जाएगा कि, मानव प्रजाति का इतिहास मुख्य रूप से अकाल, महामारी तथा युद्धों का इतिहास रहा है। अभी संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोरोना वायरस (कोविड-19) के आक्रमण को वैश्विक महामारी, वैश्विक आपदा घोषित कर दिया है। वैश्विक महामारी अर्थात पैंडेमिक ! ग्रीक के पैन (समस्त) और डेमोस (मनुष्य) से मिलकर बना है पैंडेमिक शब्द। मानव इतिहास में कितनी ही महामारियां दर्ज हैं। ''काली मौत'' अथवा ''ब्लैक डेथ'' के नाम से दर्ज महामारी ने सन् 1330 के आसपास अपना आक्रमण जब शुरू किया तो किसी को भी अंदाजा नहीं था कि आने वाले 20 वर्षों में साक्षात मृत्यु की यह अदृश्य सेना विश्व के 20 करोड़ से भी अधिक मनुष्यों को लील जाएगी।

गोंड कला का परिचय लोगों तक पहुंचे यही मेरी साधना है

जाने-माने गोंड कलाकार **सुभाष सिंह व्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

प्र. आपने गोंड पेंटिंग कब से शुरू किया?

उ. मैं तो गोंड हूं जब छोटा था लगभग बारह- तेरह साल का तभी से अपने गांव सोनपुर जो पाटन म.प्र. के पास है वहां दीवाल पर या लकड़ी पर पेंटिग बनाया करता था। मुझे पेंटिग करना अच्छा लगता था और गांव में सब बनाते थे तो मैं भी उसमें शामिल रहता था। मेरे जीजा थे जनगढ़ सिंह श्याम हमारी बड़ी दीदी ननकुसिया श्याम के पति, वह अब नहीं हैं। मेरी दीदी भी जानीमानी गोंड चित्रकार हैं,उनके आसरे से ही मैं अपनी पत्नी के साथ भोपाल आ गया। उन दिनों मैं मिट्टी की मूर्तियां और खंभार लकड़ी जो लगभग सागौन जैसी होती है उसपर चित्रकारी का काम करता था। पर जब कहीं लोक उत्सव में या प्रर्दशनी में सब स्क्रीन पेंटिग सीखने के लिए उत्साहित किया। तब से मेरी पेंटिग के बिकने लगी और उससे घर का खर्च निकलने लगा था। सन् 1996 से जब एक बार गांव से निकले तो भोपाल ही कर्म भूमि बन गई। गांव आता-जाता रहता हूं ।

प्र. कई कलाकार एक से अधिक कला माध्यमों में काम करते रहे। परंतु किसी भी कलाकार को अपना एक माध्यम तो चुनना होता है, हलांकि प्रत्येक कला में थोड़ा संगीत, थोड़ा साहित्य, थोड़ी चित्रकला होती है। फिर भी पहचाना जाता है वह किसी एक कला के माध्यम से ही। आप इस पर क्या कहेंगे?

उ. जी, आपने बहुत सही कहा। जैसा मैंने पहले कहा कि मिट्टी, काठ, कागज कैनवस पर मैंने काम तो किया पर बाद में मुझे दो चीजें समझ में आईं कि

सुभाष सिंह व्याम
गोंड कलाकार
मो. 094256-76914

कुसुमलता सिंह
प्रबंध संपादक 'ककसाड़'
मो. 099682-88050